

॥ श्रीः ॥  
चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला  
३९९  
♦♦♦

# श्रीविद्या - साधना

## श्रीविद्या का साङ्गोपाङ्ग विवेचन ( प्रथम भाग : १-३ परिच्छेद )

लेखक  
डॉ० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

*Dr. Shyama Kant Dwivedi*

M.A., M.Ed.,

Ph.D., D. Litt.

Vyākarnāchārya



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन  
वाराणसी

# विषयानुक्रमणिका



प्रथम परिच्छेद : अध्याय १-५

## ● शाक्तमत एवं श्रीसम्प्रदाय ●

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
प्रथम अध्याय	७-२१	श्रीविद्यागम की सन्तानें	१२
शाक्तसम्प्रदाय : एक विहङ्गभावलोकन		देश का वर्गीकरण	१२
श्रीविद्या एवं शक्त्युपासना की शाखायें	७	शाक्तपूजा के प्रधान केन्द्र	१३
तान्त्रिक उपासना	८	शाक्ततन्त्र के आचार्य और उनकी रचनायें	१३
तन्त्र : एक विहङ्गभावलोकन	८	शाक्तयुग	१५
तन्त्र या आगम की दृष्टियाँ	८	काश्मीरी तान्त्रिकों के ग्रन्थ	१५
शाक्ततन्त्र के प्रमुख लक्षण	८	आम्नाय-विभाजन	१५
तन्त्र के विभिन्न प्रकार	८	पूर्वाम्नाय	१६
तान्त्रिक सम्प्रदाय	९	पश्चिमाम्नाय	१६
शाक्तागम की प्रमुख विद्यायें	९	उत्तराम्नाय	१६
तन्त्र के सप्ताचार	९	दक्षिणाम्नाय	१६
तन्त्रशास्त्र में ज्ञान-भक्ति की दृष्टि	९	अध्याम्नाय	१६
तन्त्र के भावत्रय	१०	ऊर्ध्वाम्नाय	१६
तन्त्र में यजन के भेद	१०	शाक्तमत और उसका आदिकाल	१७
तन्त्र के पादचतुष्टय	१०	रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर का मत	१७
तन्त्र या आगम के तत्त्व	१०	श्रीचक्र	१७
शैवागम के स्रोत	१०	शक्ति के कामप्रधान रूप की विवेचना	१९
तन्त्र के षट्कर्म	१०	नवव्यूह	१९
तन्त्र का भोग-मोक्षसमन्वयवाद	१०	कालव्यूह	२०
तन्त्र के पञ्च मकार	११	कुलव्यूह	२०
शाक्तागम के भेद	११	नामव्यूह	२०
शाक्तोपासना के मुख्य केन्द्र	११	ज्ञानव्यूह	२०
शाक्तों के मुख्य सम्प्रदाय	११	चित्तव्यूह	२०
कौलसम्प्रदाय	११	नादव्यूह	२०
पूर्वकौल एवं उत्तरकौल	११	बिन्दुव्यूह	२०
श्रीविद्या के सम्प्रदाय	१२	कलाव्यूह	२०

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
जीवव्यूह	२०	पतिव्रता कुण्डलिनी	३८
अद्वैतवाद-तान्त्रिकों के मार्गत्रय	२१	शक्तिकुण्डलिनी	३८
आचार	२१	कुण्डलिनी	३९
पञ्च मकार	२१	विसर्ग	३९
द्वितीय अध्याय	२२-५८	श्रीविद्या-सम्प्रदाय का वर्णविज्ञान	
शाक्तमत एवं श्रीविद्या		और उसका रहस्य	३९
श्रीविद्या के सम्प्रदाय	२२	वर्ण का शक्तित्व और शिवत्व	३९
कौलमार्ग	२२	कुण्डलिनी शक्ति और भगवती	
शाक्तमत और कौलाचार	२३	महात्रिपुरसुन्दरी	४१
प्राचीन कौलसम्प्रदाय	२३	पराकुण्डलिनी	४१
अन्य कौलसम्प्रदाय	२४	वर्णकुण्डलिनी	४१
डॉ० प्रबोधचन्द्र बागची का मत	२४	प्राणकुण्डलिनी	४२
त्रिपुरोपासना के उपसम्प्रदाय	२४	ऊर्ध्वकुण्डलिनी	४२
त्रिकोण के भेद	२७	शक्तिकुण्डलिनी	४२
लक्ष्मीधर की दृष्टि में कौलमार्ग	२८	भगवती महात्रिपुरसुन्दरी का	
कुल, अकुल और कौल	२९	कुण्डलिनीस्वरूप	४५
कुल की अन्य व्याख्यायें	३०	वाग्देवता कुण्डलिनी का स्वरूप	४५
कुल का वंशानुगत अर्थ	३०	पञ्चमकारों के प्रतीकार्थ	४६
कुल का योगशास्त्रानुगत अर्थ	३०	पञ्चमकारोपयोगविषयक ग्रामक	
कुल का दर्शनानुगत अर्थ	३०	दृष्टि का निराकरण	४८
ज्ञान की व्यापकता	३१	पञ्चमकारों का प्रतीकात्मक उपयोग	४९
कुण्डलिनी शक्ति	३१	समस्त प्राणियों के प्रति	
गुरुतत्त्व	३१	आत्मीयता का भाव	५०
कुण्डलिनी के विभिन्न स्वरूप	३२	आगमसार	५०
कुमारी कुण्डलिनी और उसका अवस्थान	३२	वर्ण एवं आश्रमधर्म के अनुकूल	
योषित् कुण्डलिनी और उसका यात्रापथ	३३	पञ्चमकारों का उपयोग	५१
पतिव्रता कुण्डलिनी और यात्रापथ	३४	त्रिपुरा देवी के सङ्केतत्रय	५१
पतिव्रता कुण्डलिनी की लयभूमि	३५	कौलाचार एवं समयाचार	५२
श्रीचक्रक्रम	३६	समयिमत	५४
कुण्डलिनी का स्वस्थान	३७	भगवती का पूजा-विधान	५५
कुण्डलिनी-तत्त्व और शक्ति-जागरण	३७	भगवती की पूजा के प्रकार	५५
कुमारी कुण्डलिनी	३७	साधना एवं पूजा के अन्य भेद	५५
योषित् कुण्डलिनी	३८	परमशिव द्वारा अनुष्ठित देवी की	
		नित्योदिता पूजा का स्वरूप	५६



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
परापूजा का स्वरूप	५६	भगवती का स्वरूप एवं उनका नाम	६६
सहस्रदल कमल की पूजा	५८	चतुर्भुजी महाकाली	६६
<b>तृतीय अध्याय</b>	<b>५९-८५</b>	दुर्गासप्तशती के प्रधान देवता	६८
<b>शाक्तदर्शन : एक विहङ्गमावलोकन</b>		जगत्	६८
शाक्तदर्शन का दार्शनिक पक्ष एवं सृष्टि	५९	जीवात्मा	७१
कामकला तत्त्व	५९	पुरुष और प्रकृतितत्त्व तथा	
अहंतत्त्व	६०	शिव और शक्तितत्त्व	७३
अद्वैतवाद	६०	शिव और शक्ति	७४
तत्त्व	६०	सृष्टि और उसका प्रयोजन :	
विमर्श	६१	क्रीडा-लीला-चित्र-स्वेच्छा	७५
शिव	६१	शैव सिद्धान्त, काश्मीरीय शैव	
विश्व	६२	दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त	७६
परम सत्ता	६२	सृष्टि का प्रयोजन : लीलावाद	
सक्रिय परमशिव	६२	एवं अनुग्रह	७६
जगत् का स्रष्टा शिव और		सृष्टि का प्रेरणा-केन्द्र	७७
जगत् शिव का स्पन्द	६२	लीलावाद एवं इच्छा-सृष्टिवाद	७८
परमसत्ता में इच्छा-ज्ञान-क्रिया-स्वातन्त्र्य-		शाक्त सम्प्रदाय की मुक्तिसम्बन्धिनी	
चैतन्य-आनन्द का समावेश	६३	अवधारणा	७८
परमतत्त्व में शिव एवं शक्ति		हयग्रीवप्रणीत शाक्तदर्शनम् की दृष्टि	७८
का सामरस्य	६३	जीवन्मुक्ति	७९
परमशिव एवं विश्व का सम्बन्ध	६३	हयग्रीव की मुक्तिसम्बन्धिनी दृष्टि	८०
आदिशक्ति एवं परतत्त्व	६३	प्रजापति का मत	८०
महालक्ष्मी का स्वरूप	६३	बादरी का मत	८१
अवतारक्रम	६४	शक्तिसूत्र के अनुसार मुक्ति का स्वरूप	८३
भगवती महालक्ष्मी	६४	आचार्य अगस्त्य की दृष्टि	८३
आदिशक्ति	६४	प्रत्यगात्मावस्थान ही मुक्ति	८४
अथर्वशीर्षोक्त आत्मशक्ति :		ब्रह्मीभाव ही मुक्ति	८४
श्रीमहाविद्या का स्वरूप	६४	आत्मज्ञान ही मुक्ति	८४
महात्रिपुरसुन्दरी महाविद्या का स्वरूप	६५	<b>चतुर्थ अध्याय</b>	<b>८६-९२</b>
योगनिद्रा : दशभुजी भगवती महाकाली	६५	<b>भगवती महात्रिपुरसुन्दरी के</b>	
अष्टादशभुजी महालक्ष्मी	६५	<b>विभिन्न स्वरूप</b>	
अष्टभुजी महासरस्वती	६५	निर्गुण रूप	८६
चतुर्भुजी महालक्ष्मी	६५	पुरुष रूप	८६

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
नारी रूप	८६	स-क-ल	९९
भगवती के अन्य रूप	८७	श्रीविद्या के तीन खण्ड	१००
श्रीविद्या की निरतिशय महत्ता	८७	सुभगोदय की दृष्टि के अनुसार	
श्रीविद्या का महत्त्व	८७	तिथियाँ, उनके नाम एवं कलायें	१००
भगवती महात्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप	८९	तिथियों के नाम	१००
मुक्ति	९१	दर्शादि कलाओं का खण्डत्रय-विभाजन	१००
नाद एवं बिन्दु	९२	दर्शा आदि कलाओं का स्वरूप	१००
पञ्चम अध्याय	९३-१०७	आग्नेय खण्ड की कलायें	१००
श्रीविद्योपासना		सौरखण्ड की कलायें	१०१
पन्द्रह तिथियों की देवी के नाम	९३	सौम्यखण्ड की कलायें	१०१
त्रिपुरसुन्दरी	९४	सादाख्या चन्द्रकला	१०२
श्रीविद्या	९५	बाह्य पूजा का खण्डन	१०२
ऐक्यचतुष्टय	९५	श्रीविद्या का स्वरूप	१०३
चक्र एवं श्रीविद्यात्मक यन्त्र	९५	श्रीचक्र का विभाजन	१०४
श्रीचक्र एवं श्रीविद्या में तदात्मकता	९५	श्रीयन्त्र का विभाजन	१०४
श्रीविद्या के मन्त्राक्षर एवं उनका रहस्य	९५	श्रीचक्र एवं सत्यलोकादि लोकों में ऐक्य	१०४
श्रीविद्या का स्वरूप	९६	श्रीचक्र एवं सुतल, वितल,	
श्रीयन्त्र का स्वरूप	९६	पातालादि में ऐक्य	१०४
श्रीयन्त्र की उत्पत्ति	९७	पिण्ड एवं श्रीचक्र में ऐक्य	१०४
कुण्डलिनी और श्रीविद्या	९७	श्रीविद्या मन्त्र एवं श्रीचक्र में ऐक्य	१०५
कूटत्रय का अर्थ	९८	नाद-बिन्दु का ऐक्य	१०५
गुरु का ध्यान	९९	पिण्डस्थ चक्र एवं श्रीचक्र में ऐक्य	१०५
श्रीविद्या के अंग	९९	श्रीचक्र एवं त्रिपुरा के त्रिपुरात्व	
शाक्तदर्शन के दर्शनिक विचार	९९	में अन्तःसम्बन्ध	१०६
ह्रींकारत्रय	९९	श्रीचक्र का अर्चनक्रम	१०६
		पिण्डस्थ चक्र एवं श्रीचक्र में ऐकात्म्य	१०६

### द्वितीय परिच्छेद : अध्याय ६-१५

#### ● देवतातत्त्व ●

षष्ठ अध्याय	११३-१६५	(अ) देवता तत्त्व	११४
श्रीविद्या में देवतातत्त्व		देवताओं के तीन स्वरूप	११४
अनुबन्धचतुष्टय	११३	देवताओं के वर्ण	११५
देवता	११४	'देवता' शब्द का अर्थ	११५
विमर्शदर्पण	११४	देवों की व्यापकता	११६



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
देवता का मूल स्वरूप	११७	अर्गलास्तोत्रमन्त्र	१२६
देवता की परिभाषा	११७	कीलकमन्त्र	१२६
देवताओं के प्रकार	११८	श्रीसूक्तमन्त्र	१२७
देवताओं के भेद	११८	श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्र	१२७
आज्ञानदेवता	११८	मन्त्र-देवता और उनकी जपसंख्या	१२७
मर्त्य देवता	११९	छन्द	१२७
अधिष्ठातृ देवता	११९	ऋषि	१२७
एकदेववाद	११९	काली देवी के मन्त्र	१२८
वस्तुविभाग एवं देवविभाग	११९	देवता के रूप	१२८
छन्द	१२०	देवता के उपासनाभेद	१२८
देवता	१२०	भावनोपास्ति	१२८
विनियोग	१२०	वामकेश्वरतन्त्र की दृष्टि	१२९
विष्णुपुराण की दृष्टि से		देवता का चक्रस्वरूप	१२९
देवता का स्वरूप	१२०	(आ) <u>त्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप</u>	१२९
देवताओं के गण	१२१	बैन्दवी कला और त्रिपुरसुन्दरी	१३०
देवताओं के मुख्य स्थान	१२१	भगवती त्रिपुरा	१३०
देवता की उत्पत्ति	१२१	ब्रह्म की निष्क्रियावस्था :	
जप एवं देवता तथा नौ तत्त्व	१२१	परा संवित् अवस्था	१३१
मन्त्राधीनञ्च देवता	१२१	कामकलाविलास में पुण्यानन्द की दृष्टि	१३२
देवता की परिभाषा (कुलार्णवतन्त्र)	१२१	त्रिपुरभैरवी	१३३
बीज और देवता	१२२	षोडशी विज्ञान	१३६
बीजसाधन	१२२	अभिनवगुप्तपादाचार्य की दृष्टि	१३७
भगवत् सत्ता एवं गुरु में ऐकात्म्य	१२४	सोलहवीं तुष्टि के भाग	१३९
देवतास्वरूपिणी भगवती विमर्शशक्ति	१२४	शुक्ल पक्ष के दिनों के नाम	१३९
मन्त्र और देवता में अभेद	१२४	कृष्ण पक्ष के दिनों के नाम	१४०
देवता का स्थूल रूप	१२६	दिनों की फलश्रुति	१४०
देवता का सूक्ष्म रूप	१२६	दर्शा	१४०
देवता का पर रूप	१२६	षोडशी	१४१
ऋषि	१२६	भगवती त्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप :	
नवार्णमन्त्र	१२६	कामकलाविलास	१४२
मातृकामन्त्र	१२६	महाबिन्दु और भगवती त्रिपुरसुन्दरी	१४२
रामरक्षास्तोत्र	१२६	कामबीज एवं त्रिपुरभैरवी	१४२
देवी का कवच	१२६	बीजत्रय	१४३
		भगवती की नखशक्ति	१४४

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
भगवती की उँगलियों के नख		२. दुर्गासप्तशती	१५८
एवं भगवान् के दशावतार	१४४	३. नारदपाञ्चरात्र	१५८
दशावतारों का भगवती के साथ तादात्म्य	१४४	जगन्निर्मात्री भगवती महात्रिपुरसुन्दरी	
भगवती का कूटस्वरूप	१४५	का स्वरूप-विस्तार	१५८
भगवती का मन्त्रस्वरूप	१४५	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र और त्रिपुरासिद्धान्त	१५९
महात्रिपुरसुन्दरी का ध्यान	१४५	त्रिपुरासिद्धान्त	१६०
ललितासहस्रनाम की दृष्टि	१४६	त्रिपुरासिद्धान्त एवं प्रत्यभिज्ञा	
षोडशी	१४८	का अन्तस्सम्बन्ध	१६१
त्रिमूर्ति	१४८	चन्द्रमा और त्रिपुरसुन्दरी	१६३
त्र्यक्षरी	१४९	षोडशी कला और सुन्दरी	१६४
चिदेकरसरूपिणी	१४९	मन्त्र, चक्र एवं देवता की एकात्मता	१६५
महात्रिपुरसुन्दरी के तीन रूप	१४९	सप्तम अध्याय	१६६-२०५
(इ) दशमहाविद्या एवं त्रिपुरसुन्दरी	१४९	भगवती त्रिपुरसुन्दरी के विभिन्न स्वरूप	
दशमहाविद्याओं के नामों में मतभेद	१५०	१. ब्रह्मवैवर्तपुराण की दृष्टि से	
कालीकुल और श्रीकुल	१५१	महात्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप	१६७
काली के भेद	१५१	भगवती के विभिन्न स्वरूपों	
काश्मीरप्रचलित दश विद्या	१५२	का वर्गीकरण	१६८
सृष्टिकाली	१५२	भगवती की शक्तियों के व्यापार	१६८
रक्तकालिका	१५२	२. भगवती का मालिनी स्वरूप	१६८
कामकलाविद्या का महत्व	१५३	वर्णमाला के दो स्वरूप	१६९
महात्रिपुरसुन्दरी के विभिन्न स्वरूप	१५३	उत्तरमालाक्रम सृष्टि	१६९
भद्रकाली के भेद	१५३	परात्रिंशिकाक्रम	१६९
कालीकुल	१५४	उत्तरमालिनी वर्णमाला और मूलतत्त्व	१६९
श्रीकुल	१५४	उत्तरमालिनीक्रम	१७०
दश एवं अष्टादश महाविद्या	१५४	परात्रिंशिका की दृष्टि	१७०
षोडशी, त्रिपुरभैरवी एवं अन्य		मालिनीरूप शब्द से जगत रूप	
महाविद्याओं का आधिपत्य	१५५	अर्थ की सृष्टि का क्रम	१७०
शक्ति का निरपेक्ष स्वतन्त्र रूप	१५६	सच्चिदानन्द, परमशिवस्वरूप अ-अ-क्ष	१७१
कठोर रूप	१५७	भगवती त्रिपुरसुन्दरी ही जगत्	१७२
सौम्य रूप	१५७	भगवती राम्भु का शरीर	१७२
भुवनेश्वरी	१५७	३. महात्रिपुरसुन्दरी का सगुण-साकार	
महाविद्याओं के प्राकट्य का		एवं निर्गुण-निराकार स्वरूप	१७२
अन्य वृत्तान्त	१५७		
१. कालिकापुराण	१५७		



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
ललितासहस्रनाम की दृष्टि से		पथत्रय	१९२
भगवती के विभिन्न स्वरूप	१७२	सालोक्य का पथ	१९२
४. त्रिपुरारहस्य में भगवती त्रिपुर-		कैवल्य का पथ	१९२
सुन्दरी का स्वरूप	१७६	सामीप्य-सारूप्य-सायुज्य का पथ	१९२
५. आचार्य भास्करराय की दृष्टि		बिन्दुचक्र	१९२
और भगवती त्रिपुरसुन्दरी	१७७	अकथा	१९३
स्थूल रूप	१७८	अक्षरा	१९३
सूक्ष्म रूप	१७८	त्रिकोण और वसुकोण	१९४
पर रूप	१७८	सृष्टिक्रम	१९४
६. भगवती महात्रिपुरसुन्दरी :		संहारक्रम	१९४
सच्चिदानन्दलहरी	१७९	सृष्टिचक्र : वृत्तत्रयविशिष्ट पद्मद्वय	१९६
महात्रिपुरसुन्दरी की ब्रह्मात्मकता		भूगृहात्मक नवम चक्र	१९७
एवं आनन्दात्मकता	१७९	भगवती का पञ्चभूतात्मक एवं	
आनन्दात्मिका विद्या	१८०	चक्रात्मक स्वरूप	१९८
आनन्द और उनकी तुलनात्मक श्रेणियाँ	१८०	११. महात्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप	
७. प्रपञ्चनिर्मात्री के रूप में भगवती		(भावनोपनिषद्)	१९८
त्रिपुरसुन्दरी	१८१	भगवती का कुण्डलिनी-स्वरूप	
शिव-शक्तियोग सृष्टि	१८२	और मातृकात्मक स्वरूप	१९९
तान्त्रिक आचार्य गौडपाद की दृष्टि	१८२	१२. भगवती त्रिपुरसुन्दरी की	
माण्डूक्योपनिषद् की दृष्टि	१८३	सर्वदेव्यात्मकता	२००
शक्ति ही ब्रह्म	१८३	१३. भगवती त्रिपुरा का काम-	
आचार्य क्षेमराज की दृष्टि	१८४	कलात्मक स्वरूप	२०१
८. त्रिपुरसुन्दरी शब्दात्मिका-वर्णात्मिका		कामकला	२०१
नादात्मिका एवं मन्त्रात्मिका	१८५	कामकला का स्वरूप	२०२
भगवती त्रिपुरा, नाद एवं मन्त्र	१८५	काम एवं कला की अभिव्यक्ति	२०४
९. नादात्मक एवं मातृकात्मक		अद्वैतवाद	२०५
रूप में महात्रिपुरसुन्दरी	१८९	अष्टम अध्याय	२०६-२२६
वर्णों का स्वरूप एवं शक्ति के		भगवती महात्रिपुरसुन्दरी का स्वस्वरूप	
साथ उनका तादात्म्य	१९०	(सौन्दर्यलहरी के आलोक में)	
१०. भगवती त्रिपुरसुन्दरी का		१. भगवती महात्रिपुरसुन्दरी का	
श्रीचक्रात्मक स्वरूप	१९१	कुण्डलिनी-स्वरूप	२०६
बिन्दुचक्र	१९१	२. भगवती का चक्रात्मक स्वरूप	२०६
आचार्य भास्करराय की दृष्टि	१९१		



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
३. भगवती का श्रीचक्रात्मक स्वरूप	२०८	भगवती की कनपटी	२२४
४. भगवती का सहस्रारात्मक स्वरूप	२०९	भगवती का मुख	२२४
५. भगवती का तत्त्वात्मक एवं शक्त्यात्मक स्वरूप	२०९	भगवती के कानों के कर्णपुष्प	२२४
सर्वशक्तिवाद	२१०	भगवती की नासिका	२२४
भगवती का परमशक्त्यात्मक स्वरूप	२१३	भगवती के ओष्ठ	२२५
६. भगवती का विश्वात्मक स्वरूप	२१४	भगवती का गला	२२५
शक्तिपरिणामवाद	२१५	भगवती की नाभि	२२५
७. भगवती का मातृस्वरूप	२१५	१३. भगवती का करुणात्मक स्वरूप	२२५
८. भगवती का विश्वोद्धारक एवं विद्यारस्वरूप	२१६	<b>नवम अध्याय</b>	<b>२२७</b>
९. भगवती का कामकलास्वरूप	२१७	<b>बह्वचोपनिषद् में महात्रिपुरसुन्दरी का चिच्छक्ति का स्वरूप</b>	
१०. भगवती का मन्त्रात्मक या श्रीविद्यात्मक स्वरूप	२१७	१. भगवती का सर्वसृजनात्मक पक्ष	२२७
'ह्रीं' बीज देवी प्रणव एकाक्षर ब्रह्म	२१८	२. भगवती का परस्वरूप एवं विद्यास्वरूप	२२७
श्रीचक्र एवं श्रीविद्या में भगवती की अनुस्यूतता	२१८	३. भगवती का आत्मरूप, सच्चिदा- नन्दरूप, चिन्मात्रस्वरूप, पञ्चब्रह्म- स्वरूप तथा सोऽहं एवं महाविद्या आदि स्वरूप	२२७
११. भगवती महात्रिपुरसुन्दरी के दो विशेष स्वरूप	२१८	<b>दशम अध्याय</b>	<b>२२८-२३२</b>
भगवती का सगुण स्वरूप	२२०	<b>भगवती त्रिपुरसुन्दरी का सूक्ष्म स्वरूप</b>	
भगवती का साकार एवं विग्रहस्वरूप	२२०	मन्त्रमय भगवती	२२८
भगवती का षट्चक्रात्मक शरीर	२२१	भगवती का सूक्ष्मतम स्वरूप (कुण्डलिनी-स्वरूप)	२२९
भगवती का षट्चक्रात्मक रूप	२२१	भगवती का स्वरूप	२२९
भगवती का किरीट	२२२	भगवती कुलकुण्डलिनी के विविध रूप	२३०
भगवती के केश	२२२	कुण्डलिनी एवं श्रीविद्या का रहस्यार्थ	२३०
भगवती की माँग	२२२	श्रीविद्या का रहस्यार्थ	२३१
भगवती के धुँधुराले बाल	२२२	कुण्डलिनी ही भगवती त्रिपुरा	२३१
भगवती का ललाट	२२२	<b>एकादश अध्याय</b>	<b>२३३-२३४</b>
भगवती की भृकुटी	२२२	<b>सङ्केतपद्धति में भगवती महात्रिपुर- सुन्दरी का स्वरूप</b>	
भगवती के नेत्र	२२२	शक्तित्रयात्मक भगवती	२३३
१२. भगवती का सौन्दर्यात्मक एवं विभूत्यात्मक स्वरूप	२२२		
भगवती के नेत्र	२२४		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
भगवती का मुख	२३३	पञ्चदश अध्याय	२४०-२७४
कामेश्वरी के आयुध	२३३	त्रिपुरसुन्दरी का वाक्चतुष्ट-	
भगवती का पर्यङ्क	२३४	यात्मक स्वरूप	
भगवती का गृह एवं आसन	२३४	१. परा वाक् का स्वरूप	२४०
श्रीविद्या के लीलाविग्रह	२३४	सुभगोदयवासना	२४१
आत्मशक्ति श्रीविद्या के विभिन्न रूप	२३४	व्याकरणागम की दृष्टि	२४१
भगवती का शरीर	२३४	वाणी के भेद	२४२
द्वादश अध्याय	२३५	पश्यन्ती	२४२
त्रिपुरातापिन्युपनिषत् में भगवती		भगवती : परा वाक् की भूमि	२४२
त्रिपुरा का स्वरूप		परात्रिशिका की दृष्टि	२४३
त्रयोदश अध्याय	२३६	बिन्दु (शिव)	२४४
त्रिपुरोपनिषद् में भगवती त्रिपुरा		शङ्कराचार्य की दृष्टि	२४४
का स्वरूप		परावाक् का स्वरूप	२४४
चतुर्दश अध्याय	२३७-२३९	वाक्चतुष्टय	२४५
ब्रह्मोपनिषद् में वर्णित भगवती		वाक् तत्त्व	२४५
त्रिपुरसुन्दरी का स्वरूप		प्रकाशांश	२४६
१. चिच्छक्ति का स्वरूप	२३७	विमर्शांश	२४६
२. शक्त्यात्मक एवं विद्यात्मक स्वरूप	२३७	शिवांश-शक्त्यंश का सामरस्य	
३. प्रत्यक् चित्ति स्वरूप	२३७	और परा शक्ति का नाम	२४६
४. सर्वात्मक स्वरूप	२३८	कामकलाविलास की दृष्टि	२४७
५. त्रिपुरसुन्दरी की ब्रह्मरूपता	२३८	परा वाक् की भावना के प्रकारत्रय	२४७
६. त्रिपुरसुन्दरी की सच्चिदानन्दरूपता	२३८	अवस्थायें (चेतन तत्त्व के पाँच स्तर)	२४८
७. त्रिपुरसुन्दरी की समस्त आकारों		शब्दों के स्तर	२४८
में विद्यमानता	२३८	वाक्त्व के चार भेद	२४९
सर्व खल्विदं महात्रिपुरसुन्दरी	२३८	परा वाक्	२४९
८. एकमात्र सत्य वस्तु तथा अद्वितीय		पश्यन्ती वाक्	२५२
अखण्ड पञ्चब्रह्म के रूप में स्थित		मध्यमा वाक्	२५२
महात्रिपुरसुन्दरी	२३९	वैखरी वाक्	२५२
९. महात्रिपुरसुन्दरी : प्रत्येक जीव की		आचार्य सोमानन्द एवं अभिनवगुप्त	
ब्रह्मस्वरूप आत्मा के रूप में	२३९	के मत में प्रतीयमान वैषम्य	२५५
१०. महात्रिपुरसुन्दरी का अनेक		पश्यन्ती के भेद	२५६
शक्तियों के रूप में अवस्थान	२३९	स्थूल पश्यन्ती	२५६
		सूक्ष्म पश्यन्ती	२५६



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
पर पश्यन्ती	२५६	नवनादमयी मूक्षमा का स्वरूप	२६६
मध्यमा : विशेष स्पन्द	२५६	स्वात्मागम मुनीन्द्रप्रोक्त नादों के प्रकार	२६७
वाणियों का स्थान	२५८	सुषुम्णा में प्राणों के लय से आविर्भूत	
श्रीचक्र में शक्तियों की स्थिति	२५८	अनाहत नादों के प्रकार	२६७
एका परा	२५८	नादक्रम	२६७
तदन्या परा	२५८	शिवसंहिताप्रोक्त नादविधान एवं नादक्रम	२६८
मध्यमा	२५९	अवस्थाद्वय	२६८
वैखरी वाक् एवं मध्यमा	२५९	घटावस्था	२६८
प्रकाशांश विमर्शांश	२६०	परिचयावस्था	२६८
तन्त्रसद्भाव की दृष्टि	२६१	निष्पन्न्यवस्था	२६९
नव नाद	२६१	वैखरी वाक्	२६९
हंसोपनिषद् और नाद के भेद	२६१	वाक्त्व एवं श्रीचक्र में सामरस्य	२६९
स्वच्छन्दतन्त्र और नाद के भेद	२६२	अन्य प्रकार के सामरस्य का अभेद	२७०
सोमानन्दपाद की दृष्टि	२६३	शब्द को जागरावस्था	२७०
विमर्श शक्ति और परा-पश्यन्ती		ईक्षणा	२७१
आदि वाणियाँ	२६४	ईक्षणा के सम्बन्ध में भास्करराय की दृष्टि	२७१
नादव्यूह और शब्दवृत्तियाँ	२६४	पृङ्गाट वपु	२७२
मध्यमा वाक्	२६५	वैखरी और पञ्चदशी मन्त्र	२७३
मध्यमा के भेद	२६६	सुन्दरी के तीन रूप	२७३
नटनानन्द द्वारा उल्लिखित नादों के प्रकार	२६६	पञ्चदशाक्षरी विद्या	२७४

### तृतीय परिच्छेद : अध्याय १६-२२

#### ● मन्त्रतत्त्व ●

षोडश अध्याय	२७९-३२३	(आ) मन्त्र-विज्ञान	२८८
श्रीविद्या एवं मन्त्रतत्त्व		शब्दब्रह्म, बिन्दु, महामाया एवं मन्त्र	२८८
शून्यभावना	२८०	मन एवं मन्त्र की मात्रायें	२८९
नादभावना	२८०	मन्त्र की मात्राये	२८९
(अ) मन्त्रतत्त्व	२८०	मन्त्र और मन	२९०
तान्त्रिकों की दृष्टि	२८१	शाब्दी वृत्तियाँ और मन्त्र	२९०
मन्त्रतत्त्व की तात्त्विक दृष्टि एवं		मध्यमा, पश्यन्ती एवं परा	२९०
उसका तात्त्विक स्वरूप	२८१	शब्द के प्रकार और मन्त्र	२९०
मन्त्र और उसके जप की साधना		मूल मन्त्र का स्वरूप	२९१
का फलितार्थ	२८२	बिन्दु-क्षोभ	२९२

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
बिन्दु या महामाया तथा शब्द	२९१	विद्या	३१०
परमात्मा और बिन्दु महामाया	२९२	विद्या का मान्त्रिक स्वरूप	३११
परा वाक् की परा शक्ति	२९३	श्रीविद्या के मन्त्रावयव	३११
मन्त्र ही शक्तिसाधना	२९३	भगवती के पञ्चदशी मन्त्र के खण्ड	३१२
शब्दावस्थाये	२९३	ध्यातव्य बिन्दु	३१२
मन्त्र ही सृष्टि का आदि, मध्य एवं अन्त	२९७	श्रीविद्या के सम्प्रदाय	३१५
शब्दब्रह्म और मन्त्र	२९६	श्रीविद्या और उसके मन्त्राक्षर	३१५
सृष्टिक्रम एवं लयक्रम	२९६	तन्त्रराजतन्त्र - एक विहङ्गभावलोकन	३१५
प्राणात्मक बीजो से मन्त्र की उत्पत्ति	२९६	कादिमत	३१६
योगबीज	२९७	त्रिकोण	३१६
मन्त्र : मन की मात्राओं को क्षीणतर		पूजा के प्रकार	३१७
करते जाने का विधान	२९८	अद्वैतभावना	३१७
मन्त्र : आत्मा की रश्मियाँ	२९८	श्रीसम्प्रदाय	३१८
मन्त्रसाधना : शक्तिसाधना	२९९	श्रीविद्या के सम्प्रदाय	३१९
शक्ति के रूप	३०१	प्रागैतिहासिक युग एवं तत्कालीन	
शक्ति के परिणाम	३०२	आचार्य	३१९
विचार और मन्त्र :		कामराजसन्तानक्रम	३१९
एक शक्ति के विभिन्न रूप	३०३	लोपामुद्रासन्तानक्रम	३१९
मन्त्र और देवता का सम्बन्ध	३०३	ऐतिहासिक युग के आचार्य	३२१
मन्त्र और देवता - वाच्य-वाचकसम्बन्ध	३०४	श्रीयन्त्र और श्रीविद्या	३२२
मन्त्राक्षर और देवता के अङ्गों का सम्बन्ध	३०५	दश महाविद्याये	३२२
मन्त्र और कुण्डलिनी	३०५	श्रीविद्या के द्वादश सम्प्रदाय	३२३
मन्त्र और नाद	३०५	दश महाविद्याओं में प्रधान विद्याये	३२३
मन्त्र और जीव	३०६	नादतत्त्व एवं श्रीविद्या का अन्तस्सम्बन्ध	३२३
मन्त्र और देवता	३०६	सप्तदश अध्याय	३२४-३४२
(३) श्रीविद्या	३०६	त्रिपुरातापिन्युपनिषत् में प्रतिपादित	
षोडशाक्षरी विद्या की अवर्णनीय महत्ता	३०७	द्वादश विद्यायें	
भगवती के विश्वमय एवं		श्रीचक्र एवं मन्त्र में ऐकात्म्य	३२५
विश्वातीत स्वरूप	३०८	श्रीविद्या पञ्चदशाक्षरी विद्या :	
मन्त्र एवं यन्त्र में सामरस्य	३०९	द्वादश विद्याये	३२५
भगवती त्रिपुरमुन्दरी का विश्वात्मक रूप	३०९	द्वादश विद्याओं का संघटन तन्त्र	३२६
श्रीविद्या की रसात्मकता	३१०	पञ्चदशी मन्त्र और चक्र	३२८
(४) श्रीविद्या या पञ्चदशी मन्त्र	३१०	कुण्डलिनी खण्ड एवं पञ्चदशाक्षरी	
श्री	३१०	मन्त्र के कूट	३२८



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
श्रीविद्या के खण्ड	३२९	बाह्याडम्बरजन्य अङ्ग एवं उपासना	३४६
श्रीविद्या और उसके पचास वर्ण	३२९	अन्तरङ्ग	३४६
पौर्णमासी एवं अभावस्या का स्वरूप	३३०	बहिरङ्ग	३४७
ध्यान एवं उपासना-विधानक्रम	३३०	अन्तरङ्ग एवं बहिरङ्ग साधनो या अङ्गो मे वरीयताक्रम	३४८
श्रीविद्या में समस्त मातृकाओं का अन्तर्भाव	३३३	गुरुतत्त्व	३४८
ऐक्यचतुष्टय	३३३	श्रीविद्या एवं श्रीविद्योपासना के अंग	३४९
श्रीविद्या में वर्णमाला के वर्णों का अन्तर्भाव	३३३	आन्तरिक साधनों की श्रेष्ठता	३५०
कला, यन्त्र एवं मन्त्र की एकता	३३४	बाह्याडम्बरो का खण्डन	३५०
दर्शाद्या पूर्णिमान्त कलायें	३३४	अन्तर्मुखी साधको की साधना	३५०
अधिदेवता	३३५	जड़ लोगों की साधना	३५०
अधिष्ठान देवता	३३५	कामकला एवं मन्त्र	३५०
आग्नेय खण्ड	३३५	बाह्याङ्गों की विवेचना	३५०
सौर खण्ड	३३५	मातृका और श्रीविद्या	३५१
चान्द्र खण्ड	३३६	वर्ण एवं शक्ति में सम्बन्ध	३५२
तैत्तिरीय ब्राह्मण की दृष्टि में श्रीविद्या	३३७	परा वाक्, मातृका, पराहन्ता, विमर्श एवं ललिताभट्टारिका	३५२
उपासनाहेतु प्रशस्त एवं निषिद्ध तिथियाँ	३३८	शक्ति एवं वर्ण	३५२
श्रीविद्या और कामदेव	३३८	मातृका के भेद	३५३
श्रीविद्या एवं महात्रिपुरसुन्दरी की अभिन्नता	३३९	वर्णों का वर्ण	३५५
गायत्री मन्त्र और श्रीविद्या	३४०	मन्त्र, ऋषि, छन्द, देवता तथा विनियोग	३५५
गायत्री मन्त्र	३४०	मन्त्र और विद्या	३५६
श्रीविद्या का महत्त्व	३४०	मन्त्रजप के अंग	३५६
श्रीविद्या एवं जगत् में तादात्म्य	३४२	जप के सप्तांग	३५६
अष्टादश अध्याय	३४३-३४५	व्याहृति या प्रणव	३५७
श्रीविद्या का स्वरूप		यन्त्र	३५७
विमर्श शक्ति और श्रीविद्या	३४३	बीज	३५७
गायत्री मन्त्र और श्रीविद्या का तादात्म्य	३४३	जप के अंगभूत तत्त्व	३५८
एकोनविंश अध्याय	३४६-३५८	विंश अध्याय	३५९-३८२
श्रीविद्या के विभिन्न अङ्ग		श्रीविद्या का स्वरूप : गायत्री मन्त्र और श्रीविद्या	
बाह्य अङ्ग	३४६	गायत्री और पञ्चदशी श्रीविद्या	३५९
आन्तरिक अङ्ग	३४६	गायत्री मन्त्र और श्रीविद्या में तादात्म्य	३५९

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
पञ्चदशाक्षरी श्रीविद्या एव गायत्री	३६०	वर्णों का काल-मान	३८५
शक्तित्रय एव कूटत्रय	३६५	वाग्भवकूट	३८६
पञ्चदशी विद्या की सर्वान्मकता	३६६	कामगजकूट	३८६
३६ तत्त्व	३६८	शक्तिकूट	३८६
श्रीविद्या का विविध स्वरूप	३६८	इत्लेग्वा का स्वरूप	३८६
बिन्दु की उत्पत्ति	३७०	नाद	३८७
देवी एवं गुरु के शरीर में अभेद	३७०	बिन्दु	३८७
माता-विद्या-चक्र-स्वगुरु एव		अर्धमात्रा	३८७
स्वयं में अभेद	३७०	हीगत नव नाद	३८८
कुण्डलिनी, श्रीविद्या, ललिता		नादमञ्जरण की क्रियाओं के	
एव साधक में ऐकात्म्य	३७०	विभिन्न चरण	३८९
अर्द्धतभावना का ग्रहण	३७०	अर्धचन्द्र	३८९
श्रीविद्या एव तन्त्रहित		निरोधिका या रोधिनी	३८९
अर्थों में अभिन्नता	३७०	नाद और नादान्त	३८९
देवी के समस्त नाम, एक नाम		ही में अवस्थित नादनवक	३८९
तथा सम्पूर्ण नाम एवं नाम के		ही एव नादनवक	३९०
एकांश में अभिन्नता	३७१	नाद की अनुपत्ति	३९१
श्रीविद्या एव कुण्डलिनी में ऐकात्मकता	३७३	मात्राकाल का विवरण और श्रीविद्या	३९१
कामकूट एव गायत्री का समन्वय	३७५	मात्रा	३९१
शक्तिकूट एवं गायत्री का समन्वय	३७६	मात्राओं का अंगोहात्मक सूक्ष्म क्रम	३९२
पञ्चदशी विद्या की अन्तर्निहित शक्तियाँ	३७६	वर्ण और उच्चारणस्थान तथा	
ऋग्वेदीय नामदीय सूत्र में		उच्चारणप्रयत्न	३९३
निहित बीजमन्त्र	३७७	वर्णों के उच्चारणस्थान	३९३
श्रीविद्योपासना के अंग	३७८	वर्णोच्चारण में बाह्य प्रयत्न	३९३
कूटत्रय का व्याष्टि-समाष्टि भेद में		वर्णोच्चारण में आन्तरिक प्रयत्न	३९३
चतुर्धा भिन्न स्वरूप	३८०	कूटत्रय में मन्त्र का जपकाल	३९४
श्रीविद्या (पञ्चदशी मन्त्र) का जप-काल	३८१	कूटत्रय (५८ वर्ण)	३९४
जप के अंग	३८१	मन्त्राक्षरों का उत्पत्तिस्थान एव यत्न	३९५
एकविंश अध्याय	३८३-३९६	जागरण	३९६
श्रीविद्या और कूटत्रय		स्वप्नावस्था	३९६
भाम्कराचार्य द्वारा प्रस्तुत		सुषुप्ति की अवस्था	३९६
श्रीविद्या का परिचय	३८४	तुरीयावस्था	३९६
मनोन्मत्ता	३८५	तुरीयातीतावस्था	३९६



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
द्वाविंश अध्याय	३९७-४२२	नाद की अवस्थाये (श्रूयमाणता के आधार पर)	४११
जपतत्त्व		प्रणवस्वरूप महायन्त्र और उसके १२ अवयव	४११
सप्तविषुव	३९७	शून्य	४११
नाद का अन्त और तत्त्वबोध	४००	नाद की अवस्थायें	४११
परमपद	४००	मात्रा	४१२
पाँच अवस्थाये	४००	मात्रा और उसका रहस्य	४१२
हल्लेखा के अंग	४०१	मात्रा और मन्त्र	४१२
अवस्थाओं के स्वरूप	४०१	बिन्दु	४१३
जप के भेद	४०१	अर्धचन्द्र एवं रोधिनी की कलायें	४१४
मन्त्रावयवों का रहस्य	४०२	नादों का उच्चारणकाल	४१४
जप	४०२	नाद और वर्ण	४१५
उच्चारणगत कालतत्त्व	४०३	ही के १२ अवयव	४१५
अनुभव-स्थान	४०३	नौ नाद	४१६
मन्त्रजप और अर्थभावन	४०४	पञ्चदशी मन्त्रजपचिह्न	४१६
मन्त्रार्थों के भेद	४०४	पञ्चदशी में स्थित वर्ण	४१६
श्रीविद्या के १५ अर्थ क्यो?	४०४	ॐकार की एकादश कलायें	४१७
योगिनीहृदयप्रतिपादित अर्थ-प्रकार	४०५	प्राथमिक तीन भूमियाँ : अ-उ-म	४१९
पञ्चदशी विद्या की जपांग-स्वरूप अवस्थाये	४०८	प्रणव	४२०
पञ्चदशी विद्या-मन्त्र, मात्रा और उसका रहस्य	४०९	प्रणव के अंग	४२०
मात्रा और उच्चारणकाल	४१०	मात्राओं के विवरण का सारांश	४२१

### चतुर्थ परिच्छेद : अध्याय २३-३३

#### ● यन्त्रतत्त्व ●

त्रयोविंश अध्याय	४२७-४३७	यन्त्रों के विभिन्न प्रकार	४३३
यन्त्रतत्त्व		बिन्दु एवं शक्तिकूट या मूल यन्त्र	४३५
यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र	४२७	यन्त्र का शाब्दिक अर्थ	४३५
केन्द्रीयकरण	४२७	यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र	४३६
यन्त्र के अंग	४२७	मन्त्र के विभिन्न तत्त्व	४३७
रूप और यन्त्र	४२८	यन्त्रसाधना की आवश्यकता	४३७
यन्त्र का व्युत्पत्त्यात्मक अर्थ	४२९	चतुर्विंश अध्याय	४३८-४६२
चक्र, केन्द्र एवं यन्त्र	४३०	श्रीयन्त्र	
परमयन्त्र	४३२	श्रीयन्त्र का अर्थ	४३८

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
श्री का अर्थ	४३८	अधिदेवता	४६०
श्री की विश्रमण अवस्था	४३९	श्रीचक्र	४६१
मातृका के खण्डत्रय	४४०	नवरत्नद्वीप	४६१
श्रीचक्र	४४०	कल्पतरु	४६१
भर्मस्थान	४४०	उद्यान	४६१
सन्धिस्थान	४४०	षड् ऋतुयें	४६१
नवयोनचक्र	४४०	पांठ	४६१
श्रीचक्र के विभिन्न चक्र	४४१	इच्छाशक्ति	४६१
आभ्यन्तर दश कोण	४४१	होता	४६१
श्रीचक्र का आविर्भाव	४४१	अर्घ्य	४६१
श्रीचक्र का स्वरूप	४४२	हवि	४६१
यन्त्र के अंग	४४२	श्रीचक्र का पूजन	४६१
श्रीचक्र के आवरण	४४३	कुण्डलिनी	४६१
मूल चैतन्य के दो पक्ष	४४३	श्रीचक्र का निर्माण	४६२
बाह्य दिदृक्षा की उत्तरोत्तर उत्कटता	४४३	पञ्चविंश अध्याय	४६३-४७७
श्रीचक्र एवं पिण्डस्थ यौगिक		श्रीचक्र : श्रीयन्त्र : के नवयो-	
चक्रों का तादात्म्य	४४६	न्यात्मक अवयव	
कौलमत	४४६	महाबिन्दु	४६३
नव चक्र एवं उनमें अधिष्ठित		बिन्दु	४६३
शक्तियाँ और उनका तादात्म्य	४४७	त्रिकोण	४६३
षट्चक्रों एवं श्रीयन्त्र के		अष्टकोण	४६३
नौ चक्रों में तादात्म्य	४४८	अन्तर्दशार	४६३
षट्चक्रों एवं श्रीचक्र के नौ चक्रों		बहिर्दशार	४६४
में तादात्म्य का विवरण	४५२	चतुर्दशार	४६४
श्रीयन्त्र में गुरुनस्त्व	४५७	अष्टदल	४६५
नाड़ीयोग एवं चक्र	४५९	षोडश दल	४६५
चतुर्दशार के देवता	४६०	भूपुर	४६५
बहिर्दशार के देवता	४६०	श्रीयन्त्र का आविर्भाव	४६६
शक्त्यष्टक	४६०	श्रीयन्त्र के प्रादुर्भाव की दार्शनिक दृष्टि	४६७
अष्ट शक्तियाँ	४६०	शान्ता और श्रीचक्र का आविर्भाव	४६७
षोडश शक्तियाँ	४६०	श्रीचक्र का शिव-शक्तिचक्रात्मक	
अणिमादिक सिद्धियाँ	४६०	आविर्भाव	४६८
पञ्चबाण	४६०	श्रीचक्र का निर्माण	४६९
त्रिकोणाग्र देवता	४६०		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
संहारक्रम के श्रीयन्त्र का स्वरूप	४७०	त्रिकोणचक्र	४८५
सृष्टिक्रम के श्रीयन्त्र का स्वरूप	४७०	विवर्तवाद	४८५
मातृका एवं तन्त्रों का सम्बन्ध	४७१	विमर्श के बिन्दाकार से सृष्टि	४८५
वाग्देवता	४७१	त्रिकोणात्मक सृष्टि	४८६
सर्वज्ञादि दश देवता	४७१	रव शब्दब्रह्म	४८६
महाबिन्दु में मयका अन्नर्भाव	४७१	परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं	
बिन्दु	४७२	वैखरी का श्रवण-अधिकार	४८७
चक्र	४७२	बिन्दुरूप परावाक् की सर्वकारणरूपता	४८८
श्रीयन्त्र = त्रिगुणत्मक	४७२	शक्ति के तीन रूप	४८८
श्रीयन्त्र = त्रिखण्डात्मक	४७३	बिन्दु से त्रिकोण	४८९
श्रीयन्त्र शरीरयन्त्र के समतुल्य	४७३	महात्रिकोण एवं वाक्चतुष्टय	४९१
श्रीचक्र = त्रितयात्मक रूपों में	४७३	महात्रिकोण (महायांनि)	४९१
पिण्ड में सहस्रार	४७३	यन्त्र और पीठ	४९२
मन्त्र और चक्र में तादात्म्य	४७४	महात्रिकोण एवं पीठ	४९३
परमेशिव	४७४	पीठतन्त्र	४९३
अहम्	४७४	बिन्दु से महाबिन्दु की यात्रा	४९३
स्वात्मविश्रान्ति	४७५	महाबिन्दु	४९३
विश्वातीत एवं तन्त्रातीत अवस्था	४७५	महाबिन्दु एवं मानवपिण्ड के चक्र	४९३
आत्मविश्रान्ति एवं शुद्ध अहं	४७६	परम बिन्दु का दशधा विभाजन	४९४
<b>बह्विंश अध्याय</b>	<b>४७८-५१६</b>	महस्रारस्थ बिन्दु का अभिव्यक्ति-क्रम	४९४
<b>श्रीयन्त्र और उसका स्वरूप</b>		परमबिन्दु और उसकी चक्रात्मक सृष्टि	४९४
सृष्टिक्रम के अनुसार निर्मित श्रीचक्र	४७८	मणिपूर चक्र का जन्म	४९४
संहारक्रम के अनुसार निर्मित श्रीचक्र	४७८	अनाहत चक्र का जन्म	४९४
९ चक्र : शम्भु की ९ मूल प्रकृतियाँ	४७९	विशुद्धाख्य चक्र का जन्म	४९४
चक्रों के नाम एवं अधिष्ठात्री देवी	४७९	आज्ञाचक्र का जन्म	४९५
सर्वानन्दमय चक्र	४८०	सर्वानन्दमय बिन्दुचक्र	४९६
बिन्दु एवं महाबिन्दु	४८१	अष्टार चक्र	४९६
श्रीचक्र एवं देवी का अन्तस्सम्बन्ध	४८२	अन्तर्दशार चक्र	४९६
बिन्दुचक्र (पूर्णाहन्ता या शिवभाव)	४८२	बहिर्दशार चक्र	४९७
पूर्णाहन्ता	४८२	चतुर्दशार चक्र	४९७
महाबिन्दु और बिन्दु	४८३	अष्टदल चक्र	४९७
सर्वसिद्धिप्रदचक्र	४८४	षोडशार चक्र	४९७
प्रकृतिसम्बन्धिनी विभिन्न दृष्टियाँ	४८४	भूपुर	४९७
		श्रीयन्त्र की उपासना के मुख्य प्रकार	४९७



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
षट्चक्र-श्रीचक्र-अवस्थापञ्चक-श्रीविद्या-		श्रीचक्र का अनुलोमक्रम	५३२
पीठ-वर्ण-शक्ति-नाथ-		प्रतिलोमक्रम से चक्रों की स्थिति	
कूट-लिङ्ग आदि का सामरस्या-		और उनका स्वरूप	५३३
त्मक अन्तःसम्बन्ध	४९८	एकोनविंश अध्याय	५३५-५४१
अक्षरो में तन्वों का समावेश		श्रीचक्र और उसका रहस्यात्मक पक्ष	
तथा चक्रों से सम्बन्ध	५००	शरीर एवं श्रीचक्र में अभिन्नता	५३५
अष्टार (नवयोन्यात्मक) चक्र	५०१	श्रीचक्र की पूजा	५३५
प्रमातृपुर	५०२	दश सिद्धियाँ, त्रैलोक्यमोहन चक्र	५३६
श्रीचक्र में स्थित त्रिपुटिचक्र	५०३	सर्वाशापरिपूरक चक्र	५३६
श्रीचक्र की योनि	५०३	सर्वमक्षोभण चक्र	५३६
शिवतत्त्व के १० गुप्त भुवन	५०४	चतुर्दशार चक्र	५३६
शक्तितत्त्व के गुप्त भुवन	५०४	बहिर्दशार चक्र	५३७
शान्तितत्त्व के १८ गुप्त भुवन	५०५	सर्वरक्षाकर अन्तर्दशार चक्र	५३७
बिन्दु	५०६	सर्वरोगहर अष्टार चक्र	५३७
श्रीविद्या एवं श्रीचक्र की एकता	५११	सर्वसिद्धिप्रद चक्र	५३८
अन्तर्दशार : सर्वरक्षाकर चक्र	५१२	नित्यो एवं नित्याओ में अभिन्नता	५३८
बहिर्दशार : सर्वार्यसाधक चक्र	५१३	नित्याओ का जगत् एवं स्वस्वरूप	
चतुर्दशार चक्र	५१४	के साथ अभिन्नता	५३९
अष्टदल और षोडश दल	५१४	पिता-माता का रहस्यात्मक स्वरूप	५४०
भूपुर	५१५	पुरुषार्थचतुष्टय का स्वरूप	५४०
सप्तविंश अध्याय	५१७-५३१	त्रिंश अध्याय	५४२-५४३
श्रीचक्र : एक स्वरूपात्मक विवेचन		मानवशरीर और श्रीयन्त्र	
चन्द्रबिम्ब ही श्रीचक्र	५१७	श्रीचक्र एवं शरीरचक्रों में ऐक्य	५४२
श्रीचक्र और उसका कैलासप्रस्तार	५१८	एकत्रिंश अध्याय	५४४-५४७
श्रीचक्र और उसका भूप्रस्तार	५१९	मन्त्र-यन्त्र तथा चक्रों का अन्तस्सम्बन्ध	
श्रीचक्र की उत्पत्ति एवं उसका संघटन	५१९	ऐक्य के प्रकार	५४४
भगवती के चरणकमलों की स्थिति	५२१	मातृका त्रिपुरा	५४४
श्रीचक्र और कला विद्या	५२१	श्रीचक्र में बिन्दु का स्थान	५४७
श्रीचक्र के साथ पञ्चदशी मन्त्र		द्वात्रिंश अध्याय	५४८-५५३
एवं वर्णमाला का सामरस्य	५२३	श्रीचक्र का अर्चन	
श्रीचक्र एवं पञ्चदशी मन्त्र में ऐकात्म्य	५२४	दक्षिणामूर्ति सम्प्रदाय	५४८
अष्टाविंश अध्याय	५३२-५३४	अर्चनाक्रम	५४८
त्रिपुरातापिन्युपनिषत्प्रोक्त			
नवात्मक चक्रस्वरूप			

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
हयग्रीव एवं आनन्दभैरव सम्प्रदाय	५४८	त्रयस्त्रिंश अध्याय	५५४-५६९
श्रीचक्रार्चन	५४९	श्रीयन्त्र का महत्त्व	
अर्चन की भावना के प्रकार	५४९	श्रीयन्त्र की सर्वात्मकता	५५६
अधिकारभेद से भावना के भेद	५४९	श्रीचक्रराज एवं उपासक में अभेद	५५६
चिन्दु और त्रिकोण	५५१	मर्वात्पादक श्रीचक्रराज	५५६
श्रीचक्रार्चन के प्रमुख रूप	५५२	मानवशरीर के रूप में श्रीचक्र	५५७
बाह्य पूजा का क्रम	५५२	श्रीचक्र की शरीरावयवों एवं	
श्रीयन्त्र की आभ्यन्तर पूजा	५५२	पिण्डमय चक्रों में स्थिति	५६०

### पञ्चम परिच्छेद : अध्याय ३४-४७

#### ● उपासनातत्त्व ●

भगवती महात्रिपुरसुन्दरी की उपासना	५६७	ऋषि-छन्द-देवता आदि के	
चतुस्त्रिंश अध्याय	५६९-५७५	ज्ञान की महत्ता	५८०
पूजातत्त्व : एक दार्शनिक एवं		कौलावली-प्रोक्त अन्तर्यजन-विधान	५८१
वैज्ञानिक विश्लेषण		न्यास-विधान	५८४
विज्ञानभैरव की दृष्टि	५६९	तान्त्रिक पूजा-विधान	५८४
सङ्केतपद्धति का मत	५६९	बहिर्यजन-विधान	५८५
अभिनवगुप्त का मत	५६९	यन्त्र की स्थापना	५८६
उत्पल की दृष्टि	५६९	भगवती की उपासना की	
भट्टनागयण का मत	५६९	विविध पद्धतियाँ	५८७
विज्ञानभैरव का प्रश्नोत्तर	५७०	बहिर्याग	५८७
प्रभाकौल का मत	५७०	देवता के तीन रूप	५८८
कुलार्णवतन्त्र की दृष्टि	५७३	साधना के तीन रूप	५८८
षष्ठत्रिंश अध्याय	५७६-५८८	श्रीविद्या के अन्तरङ्गावयव	५८८
भगवती त्रिपुरसुन्दरी की उपासना		क्रियोपासना	५८८
भगवती का स्थूल रूप	५७६	श्रीविद्या के बहिरङ्ग अवयव	५८८
भगवती का सूक्ष्म रूप	५७७	सुन्दरी की उपासना	५८८
भगवती का पर रूप	५७७	सप्तत्रिंश अध्याय	५८९-५९३
त्रिपुरोपासना के विभिन्न मत	५७७	भगवती त्रिपुरसुन्दरी के विभिन्न	
आन्तर और बाह्य पूजा	५७७	स्वरूप और उनकी उपासना	
देव्योपासना और उसके अंग	५७९	सूक्ष्मरूपात्मक उपासना-विधि	५९०
वरिवस्यारहम्यम् में आन्तरिक		लोपामुद्रा विद्या	५९१
एवं बाह्य अंग	५७९	लोपामुद्रा विद्या के मूल त्रिक	५९१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
महात्रिपुरसुन्दरी और षोडशी कला	५९३	चत्वारिंश अध्याय	६२१-६२६
सप्तत्रिंश अध्याय	५९४-६०४	भगवती महात्रिपुरसुन्दरी की सरलतमा पूजा	
भगवती त्रिपुरसुन्दरी की पूजा का आदर्श स्वरूप		ललितासहस्रनाम के अनुसार	
भगवती महात्रिपुरसुन्दरी की त्रिविधोपासना	५९५	भगवती का पूजन-विधान	६२१
परा पूजा का स्वरूप	५९९	ललितासहस्रनाम महाम्स्तोत्र का परिचय	६२१
शाक्त परम्परा में भगवती की पूजा के स्थान	६०१	सहस्रनाम के पाठ की विभिन्न विधियाँ	६२२
भगवती और उपासना	६०२	स्तोत्रपाठ एवं पूजनहेतु विशिष्ट तिथियाँ एवं दिन	६२३
महात्रिपुरसुन्दरी और आत्मा	६०३	सहस्रनामस्तोत्र के पुरश्चरण की विधि	६२५
तिथियाँ और कलाये	६०३	श्रीप्राप्त्यर्थ प्रयोग	६२५
अष्टात्रिंश अध्याय	६०५-६१२	ललितासहस्रनाम में उपदिष्ट पूजाविधि एवं पूजोपकरण	६२५
जप और ध्यान तथा समयमत		विष उतारने एवं नारी-वशीकरण के प्रसङ्ग में	६२६
शुक्ल पक्ष के दिनों के नाम	६०५	एकचत्वारिंश अध्याय	६२७-६२९
कृष्ण पक्ष के दिनों के नाम	६०५	भगवती त्रिपुरसुन्दरी की उपासना : दास्यभाव	
शक्ति के भेद	६११	ज्ञानार्णव में अन्तर्यामात्मक उपासना-दृष्टि	६२७
चक्रों में श्रीविद्या की अनुस्यूतता	६११	द्वाचत्वारिंश अध्याय	६३०-६४८
प्रथम कूट	६१२	भावनोपनिषदोक्त भावनाप्रधान भगवती-पूजा	
प्रथम कूट में हृत्लेखान्तर्गत कामकला	६१२	भावनोपनिषदोक्त पूजा का फल	६३०
गुरु एवं देवता	६१२	होमविषयक भावनोपनिषद-दृष्टि	६३२
एकोनचत्वारिंश अध्याय	६१३-६२०	विज्ञानभैरव की दृष्टि	६३२
भगवती त्रिपुरा की बहिर्यागात्मक उपासना		स्वच्छन्दतन्त्र की दृष्टि	६३२
भगवती की स्थूलोपासना	६१३	योगिनीहृदयदीपिका की दृष्टि	६३२
वाममार्गी एवं कौल	६१४	उपचार	६३५
त्रिपुरा के सगुण ध्यान का यागरूप में आत्मीकरण	६१५	तन्त्रराजतन्त्र की दृष्टि	६३५
शक्ति एवं शक्तिमान में ऐकान्त्य	६१५	आत्मपूजोपनिषद के अनुसार मानमोपचार	६३८
शिव एवं शक्ति में भेद	६१६	मन्त्र कबीरदास की दृष्टि	६३९
उपासना द्वारा विश्वरूपत्व-प्राप्ति की प्रक्रिया	६१७		



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
भगवती त्रिपुरसुन्दरी के पञ्चपुष्पबाण	६४१	देवी की सपर्या-विधि	६५५
धनुष	६४१	देवी का आन्तर पूजन	६५६
पाश	६४१	आन्तर पूजा के विधान की अपरिहार्यता	६५६
अंकुश	६४१	पूजा की प्रतीकात्मिक दृष्टि	६५६
भगवान् कामेश्वर का स्वरूप	६४२	जीवन्मुक्ति	६५७
भगवती ललिता का स्वरूप	६४२	भजन और मुक्ति	६५७
विमर्श एवं लौहित्य का स्वरूप	६४३	वृत्तत्रय	६५९
सिद्धि का स्वरूप	६४३	भगवती की सपर्या	६५९
जीवन्मुक्ति	६४३	बिन्दुस्वरूप का विवेचन	६६०
ऋतुओं का स्वरूप	६४४	मूलाधार एवं स्वाधिष्ठान	
मुद्रा का स्वरूप	६४४	का सर्वोत्पादकत्व	६६१
ज्ञानशक्ति का स्वरूप	६४५	परमबिन्दु या कारणबिन्दु	६६१
इच्छाशक्ति का स्वरूप	६४५	चक्रों की गणना	६६४
मूलाधार में नाड़ियों का स्थितिक्रम	६४५	मूल दल	६६५
गुरुतत्त्व	६४६	दस दल	६६५
देह का स्वरूप	६४८	सहस्रार एवं श्रीयन्त्र में ऐक्य	६६६
कल्पवृक्ष का स्वरूप	६४८	बिन्दुतत्त्व का त्रिधा विभाजन	६६७
त्रिचत्वारिंश अध्याय ६४९-६७५		धारणात्मक भजन का स्वरूप	६६८
महात्रिपुरसुन्दरी का पूजा-विधान		शंकराचार्य की उपासना-दृष्टि	६६९
एवं पूजाफल		आचार्य शङ्कर और कुण्डलिनी	६७०
भगवती की भक्त्युपासना	६४९	पूजा-विधान	६७०
पूजा का उद्देश्य देव-तादात्म्य	६५०	सामयिकसम्मत पूजा की विशेषतायें	६७२
समयमार्ग	६५०	चतुश्चत्वारिंश अध्याय ६७३-६८९	
बिन्दुस्थान	६५१	श्रीदेवी का मन्दिर और उसका	
समया	६५१	पूजन-विधान	
पञ्चविध साम्य	६५१	महात्रिपुरसुन्दरी एवं तारा के	
कालदर्शन और समयदर्शन		नित्य धाम में साम्य	६७७
में दृष्टि-वैषम्य	६५२	भगवती के मन्दिर की पूजा	६७८
भगवती महात्रिपुरसुन्दरी की		ललिता और पञ्च ब्रह्म में तादात्म्य	६७८
उपासना के सम्प्रदाय	६५२	मन्दिरपूजा का विधान	६८०
ऐक्यचतुष्टय	६५३	भगवती का पूजन	६८०
भगवती का समाराधन	६५३	भगवती की चौंसठ उपचारों	
देवी का स्थूल स्वरूप	६५४	से पूजा का विधान	६८१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
पञ्चचत्वारिंश अध्याय ६८२-६८५		सप्तचत्वारिंश अध्याय ६९१-६९२	
मातृकाभेदतन्त्र के अनुसार		हवनादि तत्त्व और भगवती की	
त्रिपुरसुन्दरी-सपर्या		उपासना	
षट्चत्वारिंश अध्याय ६८६-६९०			
योगसाधनात्मक भगवत्युपासना			

षष्ठ परिच्छेद : अध्याय ४८-६३

● उपासना के मुख्य अंग और उनका यथार्थ स्वरूप ●

अष्टाचत्वारिंश अध्याय ६९९-७०५		परमात्मा ही सर्वोच्च वास्तविक गुरु	७१८
पूजातत्त्व और त्रिपुरोपासना		अकल्पित या सांमिद्धिक गुरु	७१८
आचार्य महेश्वरानन्द की दृष्टि ६९९		अकल्पित कल्पक गुरु	७१८
षट्त्रिंशोपचारानुगत भगवत्युपासना ७०१		कल्पित गुरु	७१९
श्रीचक्र में भगवती त्रिपुरमुन्दरी की पूजा ७०१		कल्पिताकल्पित गुरु	७१९
परापूजा ७०३		ज्ञानो गुरु	७१९
मध्यमा या परापर पूजा ७०४		योगवाशिष्ठ का मत	७१९
अपरा पूजा ७०४		नवचक्रेश्वरतन्त्र का मत	७१९
अभिभवगुप्त की दृष्टि ७०५		गुरुओं के भेद-प्रभेद	७२०
एकोनपञ्चाशत् अध्याय ७०६-७११		गुरु का सर्वातिशायित्व एवं	
देवतातत्त्व और त्रिपुरोपासना		उसका कारण	७२०
तृतीया वह्नि-मूर्य-चन्द्र-तूर्य		स्पन्दमूत्रकार की दृष्टि	७२१
कुण्डलिनी का ध्यान ७०९		गुरु की सर्वोच्च महिमा का कारण	७२२
पूजाकाल ७०९		ग्रन्थ का ग्रन्थकार भी गुरु है	७२३
पूजा के प्रकार ७०९		भाम्भकराय की दृष्टि	७२४
पञ्चाशत् अध्याय ७१२-७२४		एकपञ्चाशत् अध्याय ७२५-७४१	
गुरुतत्त्व और त्रिपुरोपासना		दीक्षातत्त्व और त्रिपुरोपासना	
शान्तदृष्टि में गुरुतत्त्व ७१२		दीक्षा के भेद	७२५
मन्त्र, मन्त्रेश्वर एवं मन्त्रमहेश्वर के		ज्ञान-दीक्षा के भेद	७२६
रूप में गुरुतत्त्व ७१३		दीक्षितों के भेद	७२६
विश्वगुरु परम शिव और गुरुपादुका ७१४		श्रेष्ठता का उत्तरोत्तर क्रम	७२६
गुरुतत्त्व ७१६		सप्तविध दीक्षा	७२७
गुरु की महत्ता का रहस्य ७१६		क्रियावती दीक्षा के प्रकारान्तर	
गुरुओं की श्रेणी ७१७		से अन्य भेद	७२७
		शैवमत में वेधदीक्षा	७२७

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
साधकों के भेद	७२८	शून्य-प्रशमन	७५२
पुत्र या समयी	७२८	प्राणायाम	७५३
दीक्षा : दार्शनिक एवं		प्राणायाम की सार्थकता एवं	
वैज्ञानिक विश्लेषण	७२९	उसकी लक्ष्मण रेखा	७५४
दीक्षा के भेद	७३१	<b>त्रयःपञ्चाशत् अध्याय ७५५-७५९</b>	
समयी दीक्षा	७३१	मन्त्रतत्त्व, मन्त्रसाधना	
योगदीक्षा (साधना दीक्षा)	७३१	और त्रिपुरोपासना	
शिवधर्मिणी, लोकधर्मिणी एवं मोक्षदीक्षा	७३४	स्वात्मसंवित् का उल्लास : मन्त्र	७५५
क्रिया-दीक्षा	७३५	संवित् देवी : मन्त्र	७५५
पुत्रक की कलादीक्षा : कलादीक्षा	७३६	नाद का उल्लास : मन्त्र	७५५
क्रियादीक्षा : शिवत्वयोजन	७३७	मन्त्रानुसन्धायक की अवस्थायें एवं मन्त्र	७५६
शून्य प्रशमन की साधना	७३७	मन्त्रजप के स्थान	७५८
दीक्षा के प्रकार	७३८	भगवती का वर्णात्मक एवं मन्त्रात्मक	
समयदीक्षा	७३८	स्वरूप तथा सृष्टि-विधान	७५८
विशेष दीक्षा	७३९	वर्णों का मन्त्रों के साथ सम्बन्ध	७५९
परात्रिंशिका में दीक्षा की दृष्टि	७३९	मन्त्र एवं जप-साधना का प्रयोजन	७५९
निर्वाणदीक्षा	७३९	<b>चतुःपञ्चाशत् अध्याय ७६०-७६०</b>	
भौतिक दीक्षा एवं नैष्ठिक दीक्षा	७४०	जपतत्त्व, जप-साधना और	
तन्त्रसमाम्नाय में मुक्ति के भेद	७४१	त्रिपुरोपासना	
<b>द्वापञ्चाशत् अध्याय ७४२-७५४</b>		जप के भेद	७६१
प्राणतत्त्व, प्राणसाधना एवं		जप : एक दार्शनिक एवं	
त्रिपुरोपासना		वैज्ञानिक विश्लेषण	७६१
प्राण और मन का सम्बन्ध	७४२	मन्त्र का स्वभाव, स्वरूप एवं	
प्राण-साधना के परिणाम	७४३	तदनुरूप उनका जपक्रम	७६५
प्राण के भेद	७४४	मन्त्र का उदय	७६६
प्राणशक्ति एवं प्राणकुण्डलिनी	७४४	मन्त्र का लय	७६६
प्राणस्पन्द का कारण	७४४	जप का स्वरूप	७६८
प्राणसञ्चार का स्थान	७४५	मन्त्र जप वर्ण एवं भगवती	
प्राणस्पन्द की उत्पत्ति	७४५	का अन्तःसम्बन्ध	७६९
प्राण का महत्त्व	७४५	जप एवं अर्थभावन	७६९
प्राण और विषुव	७४९	जप के अंग	७७२
प्राणाध्वा (कालाध्वा)	७५१	त्रिविधात्मक मन्त्र-जप	७७३
प्राणोच्चार का विज्ञान एवं प्राण-प्रशमन	७५१	विभिन्न प्रकार के जपों के विभिन्न फल	७७३



विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
जपांग : विषुव	७७४	न्यास : देवतादात्म्य की साधना	७९३
त्रैपुर दर्शन में जप के लक्षण	७७४	न्यास : अद्वैतभाव की भावना	७९५
बीजमन्त्र के अवयव	७७५	न्यास की आवश्यकता	७९५
न्यासों के प्रकार और उनका परिचय	७७५	न्यास : अद्वैतभाव की साधना	७९५
सत्ता के दो स्तर	७७७	न्यास : देवोऽह एवं विश्वतोऽह की	
परमात्मा की दो शक्तियाँ	७७७	अनुभूत्यात्मक साधना	७९६
जप	७७७	कतिपय न्यासों के उदाहरण	७९६
आन्तर जप (आभ्यन्तर मन्त्रोपासना)	७७७	वैष्णवपद्धति के अनुसार	
प्रणवरूप मूल मन्त्र के अंग	७७८	अन्तर्मातृका न्यास	७९७
मन्त्रसाधना के अवयव	७७८	बहिर्मातृका न्यास	७९८
मन्त्रसाधना	७७९	संहारमातृका न्यास	७९९
आसन के प्रकार	७८०	अङ्गवक्त्रन्यास	८०१
पञ्चपञ्चाशत् अध्याय	७८१-७९२	न्यासपञ्चक का द्वितीय न्यास	८०२
ध्यानतत्त्व, ध्यान-साधना		त्रितत्त्वन्यास	८०२
और त्रिपुरोपासना		अधोराष्टक न्यास	८०२
ध्यान का स्वरूप	७८१	शिवसद्भाव न्यास	८०२
ध्यान के प्रकार	७८१	जीवन्यास	८०२
स्थूल ध्यान, ज्योतिर्ध्यान		ऋषिन्यास	८०३
एवं सूक्ष्म ध्यान	७८५	न्यासक्रिया का फल	८०३
ध्यानत्रय की उत्कृष्टता का क्रम	७८६	सप्तपञ्चाशत् अध्याय	८०४-८२७
शिवसंहिता की यौगिक ध्यान-		पीठतत्त्व और त्रिपुरोपासना	
प्रक्रिया या राजयोग	७८६	बाह्य एवं आन्तर पीठों में तादात्म्य	८०५
हृत्पत्र में भगवती का ध्यान	७९०	पीठ, शरीर एवं श्रीचक्र में तादात्म्यभाव	८०५
सुधासिन्धु में भगवती का ध्यान	७९०	पीठन्यास तत्त्व	८०६
सूर्यमण्डल में भगवती का ध्यान	७९१	पीठ की उत्पत्ति	८०७
चन्द्रमण्डल में भगवती का ध्यान	७९१	पीठ : देवयोनियों का अधिष्ठान	८०७
पिण्डस्थ चक्रों में, कुण्डलिनीस्वरूप		पीठ के आविर्भाव की पद्धति	८०७
में, अवतारोत्पादिका के रूप में		पीठ के प्रकार	८०८
एवं कूटत्रय एवं कामकला के		पीठशुद्धि और उसके उपाय	८०८
रूप में भगवती का ध्यान	७९२	पञ्चधा पीठ	८०८
षट्पञ्चाशत् अध्याय	७९३-८०३	पीठतत्त्व का रहस्य	८०९
न्यासविद्या और त्रिपुरोपासना		कामरूप पीठ	८०९
न्यास : सोऽहमस्मि की साधना	७९३	पूर्णगिरि पीठ	८०९
		जालन्धर पीठ	८१०

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
उड्डीयान पीठ	८११	अनुभवसूत्र में अद्वैत भक्ति की दृष्टि	८४४
वाक्तृत्व और महात्रिकोण	८११	भक्ति : शक्ति की साधना	८४६
तन्त्राभ्यास-सम्बद्ध पीठचतुष्टय	८१२	महाभाव एवं भक्ति	८४७
विद्या, मन्त्र, ज्ञानादिक पीठ	८१३	रगात्मिका एवं रगानुगा भक्ति	८४७
देह के बाहर स्थित पीठ	८१४	भक्ति : अन्तःकरण की विशेष वृत्ति	८४७
देह के भीतर स्थित पीठ	८१४	साध्य भक्ति एवं साधन भक्ति	८४८
पीठचतुष्टय और उनका स्वरूप	८१६	साधन भक्ति एवं साध्य भक्ति	८४९
पीठों का महाभूतों एवं चक्रों से सम्बन्ध	८१७	ह्लादिनी शक्ति और भक्ति	८५०
पीठस्थ एवं पिण्डस्थ ज्योति-		रसों के भेद	८५३
र्लिङ्गों का स्वस्वरूप	८१९	भक्ति की व्याख्या	८५४
परलिंग	८१९	भक्ति और ब्रह्मविद्या में भेद	८५४
परिणामवाद	८२१	भक्ति की परिभाषा	८५४
षट्चक्रों में शिव-शक्तियोग	८२२	द्रवीभाव के दो रूप	८५४
इक्यावन पीठों का इतिहास	८२३	भावना	८५५
छायासती और इक्यावन पीठ	८२३	द्रवीभाव के अन्य रूप	८५५
पीठ-संख्या	८२३	भक्ति और रस का अन्तःसम्बन्ध	८५६
पीठों का देवी से सम्बन्ध	८२६	प्रेमभक्ति के प्रेम की विशेषतायें	८५७
<b>अष्टापञ्चाशत् अध्याय ८२८-८३५</b>		प्रेमरूपा भक्ति के भेद	८५८
<b>भावतत्त्व और त्रिपुरोपासना</b>		साधन भक्ति एवं साध्य भक्ति	८५८
भावतत्त्व एवं भावना	८२८	भक्ति के विभिन्न प्रकार	८६१
महाभाव एवं भावतत्त्व	८२८	रूपगोस्वामी का भक्ति का विभाजन	८६१
भावों के भेद	८२८	वोपदेवकृत भक्ति का विभाजन	८६१
साधना में अधिकारभेद	८२९	नारदभक्तिसूत्रविहित भक्ति के प्रकार	८६२
भावों में पौर्वापर्यक्रम-विधान	८२९	<b>षष्टि अध्याय ८६३-८६५</b>	
पशुभाव	८३०	<b>मनस्तत्त्व, ज्ञानतत्त्व और ज्ञान-साधना</b>	
वीरभाव	८३१	<b>एकषष्टि अध्याय ८६६-८६८</b>	
दिव्यभाव	८३२	<b>शाक्तदर्शन में ज्ञान का स्वरूप</b>	
दास्यभक्ति की प्रधानता	८३४	<b>द्वाषष्टि अध्याय ८६९-८७६</b>	
<b>एकोनषष्टि अध्याय ८३६-८६२</b>		<b>शाक्तदर्शन में प्रतिपादित योग-साधना</b>	
<b>भक्तितत्त्व और त्रिपुरोपासना</b>		ब्रह्मरन्ध्र के नीचे स्थित षट्चक्रों में	
भक्ति-साधना	८३७	बीजमन्त्रों का ध्यान	८७३
भक्ति का स्वरूप और त्रिपुरासिद्धान्त	८३८	चक्र और उसके गुण	८७३
ज्ञान-भक्ति-सामञ्जस्य	८४०	चक्र और उसके देवता, नाद एवं संख्या	८७४

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
समाधि	८७४	पञ्चश्रेणी में विभक्त वृत्तियाँ	८७८
तन्त्र के प्रति नव्य दृष्टि	८७५	आचार्य हयग्रीवोक्त वृत्ति-विभाजन	८७८
शाक्त सम्प्रदाय के गुरु	८७६	नाड़ीयोग	८७८
त्रिषष्टि अध्याय	८७७-८८१	कुण्डलिनी शक्ति	८७९
हयग्रीव-प्रतिपादित शाक्तदर्शन में		प्राण-सञ्चार एवं प्राणविज्ञान	८७९
योगस्वरूप की नव्य दृष्टि		प्राणायाम	८८०
चित्तवृत्तियों के सम्बन्ध में		क्रम-व्युत्क्रम	८८०
पतञ्जलि का मत	८७८		

